



2026:AHC: 66073-DB

16.3.2026 को सुरक्षित

30.3.2026 को पारित

इलाहाबाद उच्च न्यायालय

आपराधिक अपील संख्या - 2667/2005

छोटे काछी

.....अपीलार्थी(गण)

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य

.....प्रत्यर्थी(गण)

अपीलार्थी(गण) के अधिवक्ता

: पी.एन. दीक्षित, सुरेंद्र कुमार सिंह

प्रत्यर्थी(गण) के अधिवक्ता

: शासकीय अधिवक्ता

चैम्बर में

माननीय न्यायमूर्ति सिद्धार्थ

माननीय न्यायमूर्ति जय कृष्ण उपाध्याय

(माननीय न्यायमूर्ति सिद्धार्थ द्वारा प्रदत्त)

1. अपीलकर्ता के विद्वान न्याय मित्र श्री आशुतोष यादव; राज्य के लिए विद्वान अपर शासकीय अधिवक्ता श्री पवन श्रीवास्तव को सुना और अभिलेख पर उपलब्ध सामग्री का परिशीलन किया गया।

2. उपर्युक्त आपराधिक अपील अपीलकर्ता द्वारा अपर सत्र न्यायाधीश, न्यायालय संख्या 1, हमीरपुर द्वारा सत्र परीक्षण संख्या 111 वर्ष 2002, राज्य बनाम छोटे काछी में पारित निर्णय एवं आदेश दिनांक 5.5.2005 के विरुद्ध प्रस्तुत की गई है, जिसके द्वारा अपीलकर्ता को भारतीय दंड संहिता की धारा 376, 302 के अंतर्गत दोषसिद्ध किया गया है और उसे आजीवन कारावास तथा

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



1000/- रुपये के अर्थदंड से दंडादिष्ट किया गया है। अर्थदंड के भुगतान में व्यतिक्रम होने पर, अपीलकर्ता को तीन माह का अतिरिक्त कारावास भुगतना होगा।

3. अभियोजन की कहानी के अनुसार, 21-5-02 को रात 11:00 बजे, मोहल्ला नई बस्ती, गुर्गुज कस्बा, थाना सुमेरपुर, जिला हमीरपुर स्थित शंभू सिंह की पत्नी गायत्री देवी के किराए के मकान के पास एक खुले कमरे में, अभियुक्त छोटे काछी ने श्रीमती गायत्री देवी की 5 वर्षीय पुत्री काजल के साथ संभोग किया, जिसके कारण उसकी मृत्यु हो गई। उसी क्षण जब अभियुक्त बलात्कार कर रहा था, किसी काम से बाहर गई श्रीमती गायत्री देवी वापस लौट आईं। उसने माचिस जलाई और छोटे काछी को काजल के साथ संभोग करते हुए देखा। इसे देखने पर, उसने शोर मचाया, अपने पड़ोसी छोटे चमार को बुलाया, और अभियुक्त को पकड़ने का प्रयास किया; हालांकि, अभियुक्त, छोटे काछी, कमरे की बिना गिल वाली खिड़की से भाग निकला।

4. शिकायतकर्ता/सूचनाकर्ता, श्रीमती गायत्री देवी ने उपर्युक्त बलात्कार और हत्या के संबंध में 22-5-02 को 00:10 बजे सुमेरपुर थाने में एक मौखिक रिपोर्ट दर्ज कराई; इस रिपोर्ट के आधार पर, अभियुक्त, छोटे काछी के विरुद्ध भारतीय दंड संहिता की धारा 376 और 302 के अंतर्गत प्रथम सूचना रिपोर्ट की चिक (प्रदर्श क-1) दर्ज की गई। मामला दर्ज होने की प्रविष्टि 22-5-02 को 00:10 बजे रिपोर्ट संख्या 2 के रूप में सामान्य डायरी में की गई (प्रदर्श क-3), और प्रकरण की विवेचना तत्काल आरंभ कर दी गई।

5. 22-5-2002 को ही मामले की विवेचना आरंभ करते हुए, विवेचना अधिकारी ने केस डायरी में चिक प्रथम सूचना रिपोर्ट और वाद पंजीकरण के संबंध में सामान्य डायरी प्रविष्टि की प्रतिलिपियां उतारीं; इसके अलावा, उसने प्रथम सूचना रिपोर्ट चिक के लेखक रंजीत सिंह, शिकायतकर्ता/सूचनाकर्ता श्रीमती गायत्री देवी और गवाह छोटे चमार के बयान दर्ज किए। इसके अतिरिक्त, उसने घटनास्थल का नक्शा-नजरी (प्रदर्श क-9) तैयार किया और खून से सनी मिट्टी तथा सादी मिट्टी एकत्र करने के संबंध में एक फर्द (प्रदर्श क-10) तैयार किया। इस प्रक्रिया के दौरान, विवेचना अधिकारी के साथ उपस्थित उप-निरीक्षक श्री कृष्ण गुप्ता (अब मृत) ने मृत बालिका काजल की पंचायतनामा रिपोर्ट (प्रदर्श क-4) भरी और पोस्टमार्टम परीक्षण के लिए आवश्यक दस्तावेज तैयार किए, जिनमें शव की तस्वीरें, शव का चालान, आर.आई. को पत्र और मुख्य चिकित्सा अधिकारी को पत्र (प्रदर्श क-5 से क-8) शामिल हैं। निर्धारित नियमावली के

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



अनुसार, शव को सील करने और मुहर लगाने के बाद, उसने इसे पोस्टमार्टम परीक्षण के लिए हमीरपुर भेज दिया। तत्पश्चात, उसने अभियुक्त छोटे काछी को गिरफ्तार किया, उसका बयान दर्ज किया, और उसके अंडरवियर को अपने कब्जे में लेने के बाद उस आशय का एक फर्द (प्रदर्श क-11) तैयार किया गया।

6. 23-05-2002 को, पोस्टमार्टम रिपोर्ट (प्रदर्श क-2) प्राप्त होने पर, विवेचना अधिकारी ने केस डायरी में मृत्यु का कारण दर्ज किया और उसमें पंचायतनामा रिपोर्ट की प्रति शामिल किया; साथ ही, उसने गवाहों राम शंकर, जगदीश और सचिन के साथ-साथ पंचायतनामा रिपोर्ट के गवाहों छटंकू, राकेश, भीम उर्फ ब्रह्मप्रकाश और छोटे चमार तथा अन्य गवाहों शंभू सिंह और सुरेंद्र कुमार निगम के बयान दर्ज किए।

7. 27-5-02 को, उप-निरीक्षक श्री कृष्ण गुप्ता ने पोस्टमार्टम परीक्षण के लिए हमीरपुर मृतक का शव ले जाने के लिए उत्तरदायी कर्मियों, कांस्टेबल इमरत सिंह और कांस्टेबल हरनाम सिंह के बयान दर्ज किए, और विवेचना से संबंधित सभी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद, उचित माध्यम से सक्षम न्यायालय में अभियुक्त के विरुद्ध आरोप-पत्र (प्रदर्श क-12) प्रस्तुत किया।

8. संबंधित मजिस्ट्रेट न्यायालय द्वारा 24-03-2003 को वाद को सत्र न्यायालय के सुपुर्द कर दिया गया, तत्कालीन पीठासीन अधिकारी ने अभियुक्त के विरुद्ध भारतीय दंड संहिता की धारा 376 और 302 के अंतर्गत दंडनीय अपराधों के लिए आरोप विरचित किए, जिससे अभियुक्त ने इनकार किया और विचारण की मांग किया।

9. अभियोजन पक्ष ने निम्नलिखित गवाहों का परीक्षण किया: तथ्य के गवाह के रूप में अभियोजन गवाह-1 श्रीमती गायत्री देवी (शिकायतकर्ता/सूचनाकर्ता); और औपचारिक गवाहों के रूप में अभियोजन गवाह-2 डॉ. अखिलेश कुमार, अभियोजन गवाह-3 कांस्टेबल मोहररि रंजीत सिंह, और अभियोजन गवाह-4 थानाध्यक्ष राजपाल सिंह (विवेचना अधिकारी)।

10. इसके अलावा, निम्नलिखित दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत किए गए: प्रथम सूचना रिपोर्ट (प्रदर्श क-1), पोस्टमार्टम रिपोर्ट (प्रदर्श क-2), मामला पंजीकरण प्रविष्टि की प्रति (प्रदर्श क-3), पंचायतनामा (प्रदर्श क-4), शव की तस्वीर (प्रदर्श क-5), शव का चालान (प्रदर्श क-6), आर.आई. को पत्र (प्रदर्श क-7), मुख्य चिकित्सा अधिकारी को पत्र (प्रदर्श क-8), नक्शा-नजरी (प्रदर्श क-9),

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



खून से सनी और सादी मिट्टी की जब्ती के संबंध में फर्द (प्रदर्श क-10), अभियुक्त के अंडरवियर की जब्ती के संबंध में फर्द (प्रदर्श क-11), और आरोप-पत्र (प्रदर्श क-12)।

11. दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के अंतर्गत अभियुक्त का बयान दर्ज किया गया, जिसमें उसने अभियोजन की पूरी कहानी से इनकार किया और उसके संबंध में अनभिज्ञता व्यक्त किया। उसने विवेचना से संबंधित सभी कार्यवाहियों के बारे में अनभिज्ञता व्यक्त किया और दावा किया कि शिकायतकर्ता ने एक झूठा आरोप-पत्र गढ़ने के लिए पुलिस के साथ मिलीभगत की है। अभियोजन पक्ष के सभी गवाहों की गवाही के संबंध में, उसने तर्क दिया कि उन्होंने झूठे बयान दिए हैं, और आगे यह दावा किया कि उसे दुश्मनी के कारण झूठा फंसाया गया है और घटना के समय वह अर्ध-विक्षिप्त अवस्था में था।

12. अभियुक्त को अपना बचाव प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया गया; हालांकि, उसके समर्थन में उसकी ओर से कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया।

13. हमने अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता और राज्य के लिए विद्वान अपर शासकीय अधिवक्ता द्वारा प्रस्तुत तर्कों को सुना है तथा अभिलेख पर उपलब्ध साक्ष्य का परिशीलन किया है।

14. इस वाद में, अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत एकमात्र चश्मदीद गवाह अभियोजन गवाह-1, श्रीमती गायत्री (शिकायतकर्ता/सूचनाकर्ता) है। 04-12-03 की अपनी मुख्य-परीक्षा में अभियोजन की कहानी का समर्थन करते हुए, उसने कहा कि वह अदालत में उपस्थित अभियुक्त 'छोटे' को जानती है, जो उसके पड़ोस में थोड़ी ही दूर पर रहता है। उसने आगे कहा: "यह घटना लगभग डेढ़ साल पहले हुई थी। मैं अपनी बेटी काजल (आयु 5 वर्ष), अपनी बेटी राखी (आयु 9 वर्ष) और अपने बेटे आकाश (आयु 3 वर्ष) को घर पर छोड़कर, सुरेंद्र निगम के घर आयोजित भागवत के कार्यक्रम में काम करने गई थी।" जब मैं रात लगभग 11:00 बजे लौटी, तो दोनों बच्चे सो रहे थे, लेकिन लड़की, काजल, कहीं दिखाई नहीं दी। मैंने बगल के कमरे से, जो अभी निर्माणाधीन था, आवाजें सुनीं और देखा कि वह खुला हुआ था। मैंने अंदर देखने के लिए माचिस जलाई और देखा कि छोटे काजल के साथ यौन उत्पीड़न कर रहा था। तब मैंने छोटे चमार को आवाज दी। छोटे चमार एक लाठी लेकर आ गया। जब मैंने और छोटे चमार ने छोटे काछी को पकड़ने की कोशिश की, तो वह कमरे की उस खिड़की से भाग गया जिसमें सुरक्षा ग्रिल नहीं थी। मैंने और छोटे चमार ने दृश्य को देखने के लिए माचिस जलाई; हमने काजल को नग्न अवस्था में पाया,

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



उसके गालों और गर्दन पर चोटें थीं, और उसके जननांग क्षेत्र से खून बह रहा था। वह वहां मृत पड़ी थी।

15. इस गवाह ने अपनी मुख्य-परीक्षा में अभियोजन की कहानी का पूरी तरह समर्थन किया है। अपनी प्रति-परीक्षा में, इस गवाह ने कहा है, "मेरे पति, शंभू सिंह, उस समय घर में उपस्थित नहीं थे। वह एक लड़की की शादी में काम करने गए थे। मेरे पति पत्तल बीनने का काम करते हैं। बांकी गांव में उनका एक घर है और उनके पास कोई कृषि खेत नहीं है। शंभू सिंह चार साल से मेरे पति हैं। मैं उनके साथ चार साल से रह रही हूँ। शंभू की उम्र लगभग 20-25 वर्ष है। रवि और काजल शंभू के बच्चे नहीं हैं, केवल आकाश शंभू का बेटा है। मेरा पहला पति नवल था, वह मौदहा में रहता था। वह जीवित है लेकिन उसने मुझे छोड़ दिया है। अपने पहले पति, नवल के मुझे छोड़ने के 5-6 साल बाद, मैंने शंभू के साथ रहना शुरू कर दिया। मैंने शंभू के साथ भंवरे नहीं लीं, हमने एक मंदिर में एक-दूसरे को माला पहनाकर शादी की। नवल के मुझे छोड़ने के बाद मैं 5-6 साल तक अपने मायके में रही। घटना के दिन, शंभू सिंह पहले से ही घर से बाहर थे। वह घटना के दूसरे दिन वापस आए। मैं सुरेंद्र निगम के घर काम करने गई थी जहां भागवत के प्रवचन चल रहे थे। मैं रोजाना नहीं जा रही थी। वह भागवत के प्रवचनों का अंतिम दिन था; भोज रात 11 बजे तक चला, जिसके कारण मुझे घर वापस आने में देरी हुई। मैंने लाला गुप्ता के घर में किराए पर एक कमरा लिया था। दूसरा कमरा छोटे चमार ने किराए पर लिया था। लाला गुप्ता वहां नहीं रहते थे। घटनास्थल से सटे घर के आसपास के क्षेत्र में कोई घर या दुकानें नहीं हैं। केवल दो कमरे हैं जो निर्माणाधीन हैं। एक कमरे में दरवाजे लगे हुए थे जबकि दूसरे में अभी दरवाजे लगाने बाकी थे। मेरे कमरे के सामने एक चक्की लगी हुई है। बीच में एक कच्ची सड़क है। रास्ता करीब 10 हाथ चौड़ा है। चक्की का दरवाजा सड़क की ओर खुलता है। बिजली होने पर चक्की चलती है। लक्ष्मीचंद्र का घर चक्की से सटा हुआ है। मेरे कमरे और घटनास्थल के बीच की दीवार ढह गई थी, जिससे एक खाली जगह बन गई थी। मेरे बच्चे, काजल, राखी और आकाश, कमरे के बाहर लेटे हुए थे क्योंकि गर्मी थी। चक्की लक्ष्मीचंद्र की है। लक्ष्मीचंद्र के बच्चे सब एक शादी में गए हुए थे। मैं शाम 5:00 बजे सुरेंद्र निगम के घर गई थी। उस समय मेरे बच्चे खेल रहे थे। मैंने उन्हें लावारिस नहीं छोड़ा। मैंने कमरे की चाबी राखी को दी और उन्हें खाकर सो जाने को कहा। छोटे काछी का घर मेरे कमरे से एक मील दूर है। उसका घर मुख्य सड़क पर ईंटों का बना हुआ

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



है। घर के चारों ओर दुकानें बनी हुई हैं। वहां की जमीन काफी कीमती है। उसके पिता वृद्ध हैं। उसके चार भाई हैं, जिनमें से तीन उससे छोटे हैं। मेरे पास श्याम टेंट हाउस है, जहां लोग काम के लिए आते हैं। श्याम टेंट हाउस मुझे बुलाता है और काम की बुकिंग करता है। मुझे अक्सर काम के लिए बाहर जाना पड़ता है। मैं रात को देर से लौटती हूँ। छोटे चमार अपने कमरे के अंदर लेटा हुआ था और उसे अंदर से बंद कर लिया था। सत्यवीर का घर हमारे घर से चार-पांच गली दूर है। छोटे काछी उनके घर आता-जाता रहता था। वह मेरे घर कभी नहीं आया। वह एक अंधेरी रात थी। कोई रोशनी नहीं थी। उस समय बिजली नहीं थी, इसलिए मैंने माचिस जलाई और जांच की। जब मैं अपने कमरे में लौटी, तो मेरी बेटी बच्चों के साथ नहीं थी। लड़के फर्श पर लेटे हुए थे। मैंने माचिस जलाकर आसपास लड़की की तलाश की। सबसे पहले मैंने काजल को पड़ोस में खोजा। मैंने श्याम टेंट हाउस में पूछा। मैंने छोटे चमार की माँ से पूछा, और उसने मुझे बताया कि वह तो बस वहीं लेटी हुई थी। जब मैंने हर जगह खोज लिया और लड़की नहीं मिली, तो मैंने छोटे चमार को बुलाया, और छोटे चमार तथा उसकी माँ बाहर आए। मैंने उनसे काजल को खोजने के लिए कहा। मैं और छोटे चमार वहां खड़े बात ही कर रहे थे कि अभियुक्त ने कमरे में माचिस जलाई। तभी हमें एहसास हुआ कि कमरे में कोई है। फिर हमने छोटे को काजल के साथ कुछ अनुचित कृत्य करते देखा। काजल हमारे छोटे को देखने से पहले ही मर चुकी थी। जब मैंने छोटे चमार से कहा, 'देखो, कमरे में कोई घुसा है,' तो अभियुक्त तुरंत खिड़की से कूद गया और भाग गया। मैं छोटे चमार के साथ कमरे के अंदर गई और उसे वहां मृत अवस्था में पाया। जब मैं वापस अंदर आई, तो मुझे काजल की कोई आवाज नहीं सुनाई दी। जब मैं अपने कमरे में वापस आई, तो काजल अब जीवित नहीं थी। मैंने उप-निरीक्षक को वह जगह दिखाई जहां बच्चे सो रहे थे। मैं नहीं कह सकती कि उप-निरीक्षक ने बच्चों के सोने की जगह का उल्लेख क्यों नहीं किया, इसलिए मैं इसका कारण नहीं बता सकती। यह कहना गलत है कि बच्चे अंदर सो रहे थे। यह सच नहीं है कि मैंने और छोटे चमार ने काजल के साथ कमरे के अंदर बलात्कार होते देखा था। जैसा कि मैंने अपनी रिपोर्ट में बताया है, मैंने सबसे पहले माचिस जलाई और छोटे काछी को काजल के साथ अश्लील हरकतें करते देखा। मुझे देखकर वह भागा नहीं बल्कि जारी रहा। वहीं से मैंने छोटे चमार को डंडा लाने के लिए आवाज लगाई। मैंने कहा, 'छोटे काछी काजल के साथ अश्लील हरकतें कर रहा है।' छोटे चमार को आने में दो मिनट लगे। जब छोटे चमार मेरे दरवाजे पर पहुंचा, तो छोटे काछी भाग गया। छोटे चमार ने उसे अश्लील हरकतें करते नहीं देखा, बल्कि

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



उसे जाते हुए देखा। मुझे कमरे में जाने, छोटे चमार को बुलाने और फिर वापस आने में लगभग 4-5 मिनट लगे होंगे। यह कहना गलत है कि मेरे घर हर तरह के लोग आते हैं। यह भी गलत है कि मैं पड़ोसियों को परेशान करती हूं। मुझे नहीं पता कि छोटे काछी मानसिक रूप से अस्थिर है; बल्कि, वह समझदार है। जब मैंने छोटे काछी को काजल के साथ अश्लील हरकतें करते देखा, तो मैंने उसे पकड़ने की पूरी कोशिश की, लेकिन मैं उसे पकड़ नहीं सकी। जब मैंने और छोटे चमार ने उसे पकड़ने की कोशिश की, तो वह खिड़की से भाग गया।"

16. अपनी आगे की प्रति-परीक्षा में गवाह ने आगे कहा कि उसने 'छोटे चमार' को काजल के शव के पास छोड़ दिया था और रिपोर्ट दर्ज कराने थाने चली गई थी; थाने में, उसने दीवान जी को मौखिक रूप से विवरण बताकर रिपोर्ट दर्ज कराई। दीवान जी ने ठीक वैसा ही दर्ज किया जैसा उसने बताया था और उसे पढ़कर सुनाया, जिसके बाद उसने उस पर अपना अंगूठे का निशान लगा दिया। न्यायालय में, गवाह को प्रथम सूचना रिपोर्ट पढ़कर सुनाई गई; उसने पुष्टि की कि यह वास्तव में वही रिपोर्ट है जो उसने दर्ज कराई थी, और उसने चिक प्रथम सूचना रिपोर्ट पर लगे अपने अंगूठे के निशान को 'प्रदर्शक-1' के रूप में पहचाना।

17. अभियोजन गवाह-2, डॉ. अखिलेश कुमार ने अपनी मुख्य-परीक्षा में कहा कि, 22-5-2002 को, वह जिला अस्पताल, हमीरपुर में वरिष्ठ रेडियोलॉजिस्ट के रूप में तैनात थे। उस दिन, दोपहर 3:00 बजे, उन्होंने नई बस्ती, गुर्गुज, सुमेरपुर निवासी शंभू सिंह की 5 वर्षीय पुत्री कुमारी काजल के शव का पोस्टमार्टम परीक्षण किया, जिसे सुमेरपुर पुलिस स्टेशन के कांस्टेबल इमरत सिंह और हरनाम सिंह द्वारा लाया गया था; उन्होंने मृत्यु का संभावित समय लगभग एक दिन पूर्व बताया।

18. शव के बाहरी परीक्षण पर, गवाह ने पाया कि मृतका औसत शारीरिक बनावट की एक लड़की थी, जिसकी आयु लगभग पांच वर्ष थी। उसकी आंखें और मुंह बंद थे। उसके मुंह के दाहिनी ओर से खून रिस रहा था। पेट पर मृत्यु पश्चात के धब्बे मौजूद थे और पेट थोड़ा फूला हुआ प्रतीत हो रहा था। निचले अंगों में मृत्यु पश्चात की कठोरता मौजूद थी और गर्दन तथा ऊपरी बांहों से गुजर चुकी थी। गवाह ने मृतका के शरीर पर निम्नलिखित मृत्यु-पूर्व चोटें देखीं:

i- दाहिने कान के ठीक सामने दाहिने गाल पर 8 सेमी x 7 सेमी आकार की सूजन और एक छिला हुआ घाव मौजूद था।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



ii- दाहिने कान के नीचे गर्दन के ऊपरी हिस्से पर 6 सेमी x 5 सेमी के क्षेत्र में कई खरोंच के निशान मौजूद थे।

iii- गर्दन के बाईं ओर 6 सेमी x 3 सेमी के क्षेत्र में कई खरोंच के निशान मौजूद थे।

19. जननांगों का परीक्षण करने पर, गवाह ने देखा कि जननांग क्षेत्र के चारों ओर खून मौजूद था। हाइमन फटा हुआ था। लेबिया माइनोरा फटा हुआ था, जिससे खून से सना हुआ सीरम जैसा तरल पदार्थ रिस रहा था। योनि की पिछली दीवार फटी हुई थी, और मलाशय की बाहरी दीवार भी फटी हुई थी; दबाव डालने पर उसमें से मल निकल रहा था। पोस्टीरियर फोर्निक्स और गर्भाशय का निचला हिस्सा भी फटा हुआ था।

20. शव के आंतरिक परीक्षण पर, गवाह ने खोपड़ी और कपाल को सामान्य स्थिति में पाया; झिल्लियां और मस्तिष्क संकुलित पाए गए। कशेरुका छल्ले सामान्य थे, और रीढ़ की हड्डी को नहीं खोला गया था। दीवारें, पसलियां और हड्डियां सामान्य थीं। श्वासनली में और श्वसन प्रणाली की दोनों मुख्य गुहाओं में हल्का संकुलन था। दोनों फेफड़े संकुलित थे। पेरीकार्डियम सामान्य था; हृदय का दाहिना कक्ष भरा हुआ था, जबकि बायां कक्ष खाली था। पेट की दीवारें, उदर गुहा और छिद्र सामान्य प्रतीत हुए। मौखिक गुहा और ग्रसनी दोनों संकुलित थे। दांतों की संख्या 10/10 थी। आमाशय में लगभग 4 औंस अर्ध-ठोस भोजन था। छोटी आंत में गैस और आंशिक रूप से पचा हुआ खाद्य पदार्थ था, जबकि बड़ी आंत में गैस और मल था। यकृत सामान्य था, और पित्ताशय आधा भरा हुआ था। अग्न्याशय, प्लीहा और दोनों गुर्दे सामान्य थे। मूत्राशय खाली था।

21. गवाह ने कहा कि मृत्यु का कारण जननांग क्षेत्र में आई गंभीर चोटों के परिणामस्वरूप लगा सदमा था, और पुष्टि की कि बलात्कार के कृत्य के दौरान दी गई चोटों के परिणामस्वरूप मृत्यु होना संभावित है। इसके अलावा, गवाह ने अपने द्वारा तैयार की गई पोस्टमार्टम रिपोर्ट की पहचान की। गवाह ने यह भी गवाही दी कि यह संभावित है कि मृतका, काजल की मृत्यु 21-5-2002 को रात लगभग 11:00 बजे बलात्कार के दौरान लगी जननांगों की चोटों के परिणामस्वरूप हुई।

22. अभियोजन गवाह-3, कांस्टेबल मोहर्रिर रंजीत सिंह ने अपनी मुख्य-परीक्षा में कहा कि 22-05-02 को, वह सुमेरपुर पुलिस स्टेशन में कांस्टेबल मोहर्रिर के पद पर तैनात थे। उन्होंने आगे

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



गवाही दी कि उस दिन, रात 00:10 बजे, उन्होंने शंभू सिंह की पत्नी, शिकायतकर्ता श्रीमती गायत्री देवी द्वारा दी गई मौखिक सूचना के आधार पर चिक प्रथम सूचना रिपोर्ट तैयार की; उन्होंने पुष्टि की कि उन्होंने बिल्कुल वैसा ही लिखा जैसा उसने बताया था, उसे पढ़कर सुनाया, चिक प्रथम सूचना रिपोर्ट पर उसके अंगूठे का निशान प्राप्त किया, और उसी समय सामान्य डायरी में दिनांक 22-5-02 की रिपोर्ट संख्या 2 के रूप में 00:10 बजे इस घटना के संबंध में प्रविष्टि की। गवाह ने चिक प्रथम सूचना रिपोर्ट को अपनी लिखावट में होने और अपने हस्ताक्षर होने के रूप में पहचाना, और वाद पंजीकरण के संबंध में उपर्युक्त सामान्य डायरी प्रविष्टि को प्रदर्श क-3 के रूप में विधिवत साबित किया।

23. अभियोजन गवाह-4, थानाध्यक्ष राजपाल सिंह इस प्रकरण के विवेचना अधिकारी हैं और उन्होंने अपनी मुख्य-परीक्षा में प्रकरण की विवेचना के दौरान उनके द्वारा उठाए गए सभी कदमों के बारे में साबित किया है। उन्होंने अपने द्वारा तैयार किए गए सभी अभियोजन कागजातों को साबित किया है और कहा है कि मृतका के शव की पंचायतनामा रिपोर्ट उप-निरीक्षक श्री कृष्ण गुप्ता द्वारा भरी गई थी, जो अब जीवित नहीं हैं। वह दिवंगत उप-निरीक्षक श्री कृष्ण गुप्ता की लिखावट और हस्ताक्षर को जानते हैं और पहचानते हैं तथा इस गवाह ने उनके द्वारा तैयार की गई पंचायतनामा रिपोर्ट (प्रदर्श क-4) और संबंधित कागजातों (प्रदर्श क-5 से क-8) को साबित किया है।

24. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता ने तर्क दिया है कि डॉक्टर के उपर्युक्त बयान, पोस्टमार्टम रिपोर्ट और परिस्थितियों से यह परिलक्षित होता है कि मृतका, काजल की मृत्यु 21-05-02 को लगभग 08.00 बजे शाम को हुई थी, और इस कारण से, चिकित्सा साक्ष्य चश्मदीद गवाह के साक्ष्य की पुष्टि नहीं करते हैं।

24. हम अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता के उक्त तर्क से सहमत नहीं हैं क्योंकि अभियोजन गवाह-1, डॉक्टर ने अपनी मुख्य-परीक्षा में स्पष्ट रूप से कहा है कि मृतका, काजल की मृत्यु 21-05-02 को रात लगभग 11.00 बजे उसके साथ बलात्कार के दौरान उसके जननांगों पर आई चोटों का संभावित परिणाम थी। इस गवाह की प्रति-परीक्षा में जो तथ्य सामने आए हैं, वे यह निर्धारित नहीं करते हैं कि मृतका कु. काजल की मृत्यु 21-05-02 को रात 11.00 बजे नहीं हुई थी।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



25. मृतका के शव का पंचायतनामा उप-निरीक्षक, श्री कृष्ण गुप्ता द्वारा 22-05-02 को सुबह 6.30 बजे किया गया था और उप-निरीक्षक ने शव के पास एक समीज (प्रयुक्त और दागदार), एक अंडरवियर और खून पाया था। उप-निरीक्षक ने एक निर्माणाधीन खुले कमरे में नमक की तीन बोरियों के पीछे शव को चित अवस्था में पड़ा हुआ पाया। मृतका का सिर उत्तर-पूर्व दिशा में था और उसके पैर दक्षिण-पश्चिम दिशा में थे। दोनों पैर घुटनों से फैले हुए थे और घुटने जमीन से लगभग 6 इंच ऊपर थे। जननांगों से खून बह निकला था और शरीर थोड़ा अकड़ गया था। जननांगों के आसपास के क्षेत्र में, जांघों पर और हाथ की उंगलियों पर खून के धब्बे थे। पंचों और उप-निरीक्षक की राय में, मृतका के साथ एक नृशंस बलात्कार किया गया था। नियमों के अनुसार उप-निरीक्षक द्वारा शव को एक कपड़े में सील कर दिया गया, जिन्होंने आवश्यक कागजात (प्रदर्शक-5 से प्रदर्शक-8) तैयार किए और इसे पोस्टमार्टम के लिए कांस्टेबल इमरत सिंह और हरनाम सिंह को सौंप दिया।

26. उपरोक्त तथ्यों और साक्ष्यों से हम यह तथ्य साबित पाते हैं कि 21-05-02 को रात लगभग 11.00 बजे, श्रीमती गायत्री देवी के घर के समानांतर स्थित एक निर्माणाधीन इमारत के खुले कमरे में, मृतका, कु. काजल, जो लगभग 05 वर्ष की एक मासूम बच्ची थी, के साथ अत्यंत अमानवीय तरीके से संभोग किया गया, जिससे उसे आई चोटों के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

27. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता ने प्रस्तुत किया है कि प्रथम सूचना रिपोर्ट में विलंब हुआ है। हम पाते हैं कि अपराध 21-5-02 को रात लगभग 11.00 बजे किया गया था और अपराध के संबंध में सूचना श्रीमती गायत्री देवी द्वारा 22-05-02 को 00.10 बजे पुलिस स्टेशन सुमेरपुर में मौखिक रूप से दी गई थी। घटनास्थल थाने से उत्तर दिशा में लगभग 1/2 फर्लांग की दूरी पर है। हम विद्वान अधिवक्ता के उपरोक्त तर्क से सहमत नहीं हैं। अपराध शिकायतकर्ता/सूचनाकर्ता श्रीमती गायत्री देवी की 05 वर्षीय पुत्री, कु. काजल के साथ बलात्कार और उसके बाद उसकी हत्या से संबंधित है तथा इस घटना के संबंध में सूचना गायत्री देवी द्वारा घटना के 01 घंटे 10 मिनट बाद दी गई थी। यहां, हम यह उल्लेख करना आवश्यक समझते हैं कि घटना रात के लगभग 11.00 बजे घटित होना अभिकथित है और ऐसी गंभीर घटना के घटित होने के बाद, यह स्वाभाविक है कि कु. काजल की मां, श्रीमती गायत्री देवी का मानसिक संतुलन निश्चित रूप से बिगड़ गया होगा, इस तथ्य को देखते हुए कि घटना के दिन रात में उसके पति भी घर में उपस्थित नहीं थे

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



और इसलिए उस समय की परिस्थितियों को देखते हुए घटना की सूचना देने में 01 घंटे 10 मिनट की देरी को विलंब नहीं माना जा सकता। जैसा कि आरोप लगाया गया है, उक्त देरी उचित, तार्किक और स्वाभाविक है और यह किसी भी प्रकार से अभियोजन के साक्ष्य और अभियोजन की कहानी पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालती है।

28. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता का अगला तर्क यह है कि उसे गांव की दुश्मनी के कारण फंसाया गया है। दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 के अंतर्गत अभियुक्त द्वारा दिए गए बयानों में, उसने श्रीमती गायत्री द्वारा उसके विरुद्ध दिए गए बयान को झूठा बताया है और दुश्मनी के कारण मामले में झूठा फंसाए जाने की बात कही है। उसने घटना के समय स्वयं को मानसिक रूप से अर्ध-विक्षिप्त बताया है। ऊपर बताए गए तथ्यों से, यह स्पष्ट है कि अभियुक्त ने कहीं भी यह आरोप नहीं लगाया है कि उसकी श्रीमती गायत्री देवी के साथ कोई दुश्मनी थी; हालांकि उसने यह जोर देकर कहा है कि उसे दुश्मनी के कारण मामले में फंसाया गया है, लेकिन उसने यह खुलासा नहीं किया है कि उसकी दुश्मनी किसके साथ थी। मृतका की मां, अभियोजन गवाह-1, श्रीमती गायत्री देवी के बयान में भी, अभियुक्त की ओर से ऐसा कोई सूचक प्रश्न नहीं पूछा गया है जो श्रीमती गायत्री देवी की अभियुक्त के साथ कोई दुश्मनी स्थापित करता हो। प्रति-परीक्षा में, गायत्री देवी से पूछा गया था कि क्या उसने अभियुक्त के दुश्मनों के कहने पर उसे झूठा फंसाया था, और उससे यह सूचक प्रश्न भी पूछा गया था कि क्या सुमेरपुर के एक व्यापारी ने अभियुक्त छोटे काछी के घर पर कब्जा करने का प्रयास किया था और क्या उसने वास्तव में उसके उकसावे पर अभियुक्त को झूठा फंसाया था। गायत्री देवी की अभियुक्त से कोई दुश्मनी नहीं है, इसके अलावा, अभियुक्त छोटे काछी और उसके दुश्मनों के बीच दुश्मनी के संबंध में अभियुक्त द्वारा कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है जो यह साबित कर सके कि श्रीमती गायत्री का अभियुक्त छोटे काछी के दुश्मनों के साथ कोई घनिष्ठ संबंध था और वह उनके प्रभाव में थी। इसलिए हम दिए गए तर्क को अस्वीकार करते हैं।

29. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता का अगला तर्क घटनास्थल पर प्रकाश के स्रोत के अभाव के बारे में है। यह अभिलेख पर है कि घटना 21-05-02 को रात लगभग 11.00 बजे हुई थी। घटनास्थल मोहल्ला नई बस्ती, गुर्गुज कस्बा, थाना सुमेरपुर स्थित एक अर्ध-निर्मित इमारत में एक खुला कमरा है और वहां प्रकाश का कोई स्रोत नहीं था। घटना के समय अंधेरा था। प्रकाश के

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



स्रोत के संबंध में, घटना की चश्मदीद गवाह, अभियोजन गवाह-1, श्रीमती गायत्री देवी ने अपने बयान में स्पष्ट रूप से कहा है कि, "मैंने माचिस जलाई थी और छोटे को काजल के साथ गलत काम करते देखा।" इसी के संबंध में, इस गवाह ने प्रति-परीक्षा के दौरान कहा है, "...वह एक अंधेरी रात थी, कोई रोशनी नहीं थी। उस समय बिजली कटी हुई थी, इसलिए मैंने दृश्यता के लिए माचिस जलाई थी। मैंने माचिस की रोशनी में लड़की की तलाश की थी।" पूर्वोक्त गवाही प्रथम सूचना रिपोर्ट द्वारा भी समर्थित है क्योंकि इस गवाह ने पुलिस स्टेशन में घटना की मौखिक रूप से रिपोर्ट की है जिसमें उसने कहा है, "कुछ अंदेशा होने पर, मैं पास के कमरे में गई जो खाली रहता है और माचिस की रोशनी में देखा कि गंगा का बेटा छोटे काछी मेरी बेटी, काजल के साथ जमीन पर गलत काम कर रहा था।" प्रकाश स्रोत की उपस्थिति के संबंध में कोई संदेह नहीं है, और माचिस की रोशनी सूचनाकर्ता, श्रीमती गायत्री देवी के लिए उस अभियुक्त को भली-भांति पहचानने के लिए पर्याप्त थी, जिसे वह पहले से ही अच्छी तरह जानती थी।

30. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता ने यह भी तर्क दिया है कि गायत्री अच्छे चरित्र की महिला नहीं है और असामाजिक तत्व या खराब प्रतिष्ठा वाले व्यक्ति उसके घर आते-जाते थे, और उनमें से ही किसी ने अपराध किया होगा तथा अभियुक्त को झूठा फंसा दिया होगा और अभियोजन गवाह-1 का बयान अविश्वसनीय है। इसके अलावा, अभियोजन पक्ष ने दूसरे गवाह, छोटे चमार को गवाह के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, और यह तथ्य भी अभियोजन गवाह-1 के इस बयान को अविश्वसनीय बनाता है।

31. हम अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता से सहमत नहीं हैं। यह सच है कि श्रीमती गायत्री ने अपने बयान में स्वीकार किया कि उसके पूर्व पति ने उसे छोड़ दिया था, कि वह छोड़े जाने के बाद लगभग 5-6 वर्षों तक अपने माता-पिता के घर रही थी, और उसके बाद उसने शंभू सिंह से शादी कर ली, और कुमारी काजल तथा राखी उसके बच्चे हैं। हालांकि, केवल यह तथ्य ही इस गवाह के बयान को अविश्वसनीय नहीं बनाता है; बल्कि, यह उसकी विश्वसनीयता को मजबूत करता है क्योंकि उसने अदालत के सामने अपने जीवन की सच्चाई को प्रकट किया है। अपीलकर्ता ने अपने बचाव में ऐसा कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया जिससे यह साबित हो सके कि समाज में संदिग्ध प्रतिष्ठा वाले असामाजिक तत्व श्रीमती गायत्री देवी के घर अक्सर आते थे। इसके अलावा,

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



अभियुक्त ने अपने बचाव में ऐसा कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है जो श्रीमती गायत्री के चरित्र पर प्रश्नचिह्न लगा सके।

32. यह सच है कि जब अभियोजन गवाह-1 ने उसे बुलाया तो छोटे चमार घटनास्थल पर आया था, और अभियोजन पक्ष ने छोटे चमार को गवाह के रूप में प्रस्तुत नहीं किया। हालांकि, अभियोजन पक्ष ने छोटे चमार को गवाह के रूप में प्रस्तुत करने के काफी प्रयास किए, लेकिन वह अनुपलब्ध पाया गया। साक्ष्य के लिए छोटे चमार को भेजे गए समन पर, पुलिस रिपोर्ट प्राप्त हुई कि छोटे चमार बरौर मोहल्ला, डिग्री कॉलेज के पास, थाना बरौर का मूल निवासी था, और वह वर्तमान में उस अस्थायी पते पर नहीं रहता है जहां वह घटना के समय रह रहा था। ये रिपोर्टें 20-11-2003 और 4-4-2004 की थीं। बाद में, छोटे चमार के विरुद्ध समन कानपुर देहात जिले में उसके स्थायी पते पर भेजे गए, और वहां से भी पुलिस रिपोर्ट प्राप्त हुई जिसमें कहा गया था कि इस नाम और पते वाला कोई व्यक्ति वहां नहीं रहता है। इसके बाद, घटना के समय दिए गए पते पर छोटे चमार के विरुद्ध फिर से जमानती वारंट जारी किए गए, जिस पर 23-8-04 को फिर से एक रिपोर्ट प्राप्त हुई कि इस नाम का कोई व्यक्ति उक्त पते पर नहीं रहता है और वह कानपुर देहात शहर और थाना बरौर में रह रहा है। उपरोक्त तथ्यों से, यह स्पष्ट है कि अभियोजन पक्ष ने छोटे चमार को गवाह के कटघरे में प्रस्तुत करने के उचित प्रयास किए, लेकिन उसके बाद भी उक्त छोटे चमार उपलब्ध नहीं था और इस कारण से उसका साक्ष्य दर्ज नहीं किया जा सका और इस प्रकार अभियोजन पक्ष ने अदालत में छोटे चमार को प्रस्तुत न करने में कोई लापरवाही नहीं की है और उसके परीक्षण न होने के कारण, श्रीमती गायत्री देवी के बयान को अविश्वसनीय घोषित नहीं किया जा सकता है।

33. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता ने यह भी तर्क दिया कि अभियुक्त के अंडरवियर का कोई रासायनिक परीक्षण नहीं किया गया है, जिसे विवेचना अधिकारी ने 22.05.02 को सुबह लगभग 11:30 बजे उसकी गिरफ्तारी के समय अपने कब्जे में ले लिया था और, अभियुक्त के अंडरवियर पर वीर्य का कोई धब्बा नहीं पाया गया था। यह तथ्य अभियोजन की कहानी के लिए घातक है और अभियोजन की कहानी को संदेहास्पद बनाता है।

34. हम अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता के उक्त तर्क से भी सहमत नहीं हैं। यह सच है कि विवेचना अधिकारी अभियोजन गवाह-4 अर्थात् थानाध्यक्ष राजपाल सिंह ने अपने बयान में कहा है

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



कि उन्होंने अभियुक्त के अंडरवियर को अपने कब्जे में ले लिया था क्योंकि उस पर वीर्य मिल सकता था। फर्द में यह उल्लेख नहीं किया गया था कि अंडरवियर पर वीर्य के धब्बे दिखाई दे रहे थे क्योंकि अंडरवियर पर वीर्य के धब्बे स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहे थे और मैंने अंडरवियर का चिकित्सीय परीक्षण नहीं करवाया। विवेचना अधिकारी ने स्पष्ट रूप से कहा है कि अभियुक्त के अंडरवियर पर वीर्य के धब्बे स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहे थे जिसे उनके द्वारा कब्जे में लिया गया था और, इसलिए, उन्होंने फर्द में इस तथ्य का उल्लेख नहीं किया और, इसलिए, उन्होंने रासायनिक परीक्षण नहीं करवाया। उक्त आपराधिक घटना 21.05.02 को रात लगभग 11:00 बजे हुई और विवेचना अधिकारी ने अभियुक्त छोटे काछी को 22.05.02 को दिन में लगभग 11:30 बजे गिरफ्तार किया और इस लंबे अंतराल में, यदि अभियुक्त ने घटना के समय इसे पहना था, तो वह अपना अंडरवियर आसानी से बदल सकता है, और गिरफ्तारी के समय अभियुक्त द्वारा पहने गए अंडरवियर पर वीर्य कण के धब्बों का न होना, अभियोजन की कहानी को कमजोर नहीं करता है और, उक्त आधार पर, अभियोजन की कहानी संदेहास्पद नहीं हो जाती है।

35. यह सच है कि घटना की एकमात्र चश्मदीद गवाह अभियोजन गवाह-1 श्रीमती गायत्री देवी है और कोई भी घटना का गवाह नहीं है। यह सुस्थापित विधि है कि केवल एकमात्र चश्मदीद गवाह के आधार पर, जिसके साक्ष्य का अभिलेख पर उपलब्ध अन्य साक्ष्यों से समर्थन होता है, अभियुक्त को दोषसिद्ध किया जा सकता है। प्रश्नगत आपराधिक मामले में, एक मासूम बच्ची के साथ भयानक और नृशंस संभोग कर उसकी हत्या करने का आरोप है और ऐसी घटना का कोई चश्मदीद गवाह होना संभव नहीं है क्योंकि अभियुक्त ने निश्चित रूप से संभोग के कृत्य को लोगों से छिपकर करने का प्रयास किया और यहां यह उल्लेख करना भी आवश्यक है कि प्रश्नगत घटना रात लगभग 11:00 बजे हुई।

36. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता ने अपने तर्क में यह भी कहा है कि घटना के समय अभियुक्त मानसिक रूप से अस्वस्थ था और इस कारण से, वह ऐसी घटना नहीं कर सकता है।

37. हम अभियुक्त के विद्वान अधिवक्ता के उक्त तर्क से भी सहमत नहीं हैं क्योंकि अभियुक्त ने ऐसा कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया जिससे यह साबित हो सके कि घटना के समय अभियुक्त मानसिक रूप से अस्वस्थ था।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



38. शिकायतकर्ता/सूचनाकर्ता (अभियोजन गवाह-1) श्रीमती गायत्री देवी का साक्ष्य विश्वसनीय पाया गया है और उसके द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य अभियोजन पक्ष के चिकित्सा साक्ष्य द्वारा भी समर्थित है। माचिस की रोशनी में पहले से ज्ञात अभियुक्त को पहचानना पूरी तरह से स्वाभाविक और संभव है। प्रथम सूचना रिपोर्ट में कोई विलंब नहीं है। अभियुक्त की श्रीमती गायत्री से कोई रंजिश नहीं थी और असली अपराधी, जिसने अभियोजन गवाह-1 की 5 वर्षीय नाबालिग बच्ची के साथ नृशंस संभोग कर उसकी हत्या की है, को बचाकर किसी निर्दोष व्यक्ति को फंसाने की संभावना न के बराबर है।

39. हमने विचारण न्यायालय द्वारा दर्ज किए गए निष्कर्षों में कोई दुर्बलता नहीं पाई है।

40. विचारण न्यायालय का निर्णय और आदेश गुण-दोष रहित है और पुष्ट किए जाने योग्य है।

41. उपर्युक्त आपराधिक अपील **खारिज** की जाती है।

42. अपीलकर्ता कारागार में है। वह शेष सजा भुगतेगा।

43. कार्यालय को विचारण न्यायालय का अभिलेख विचारण न्यायालय को भेजने और विचारण न्यायालय को इस निर्णय से अवगत कराने का निर्देश दिया जाता है।

44. हम विद्वान न्याय मित्र श्री आशुतोष यादव द्वारा प्रदान की गई सहायता की सराहना करते हैं और यह निर्देश दिया जाता है कि बिल प्रस्तुत करने के एक महीने के भीतर उन्हें उनके पेशेवर शुल्क के रूप में 15,000/- रुपये (पंद्रह हजार रुपये) का भुगतान किया जाए।

(न्यायमूर्ति जय कृष्ण उपाध्याय) (न्यायमूर्ति सिद्धार्थ)

30 मार्च, 2026

रुचि अग्रहरी

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”